भारतीय पारिवारिक संरचना में उदीयमान आधुनिक प्रवृत्तियां: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ0 पिंकी
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, बी0डी0एम0म्यू0 गर्ल्स डिग्री कॉलेज शिकोहाबाद

सारांश

परिवार समाज की एक मूलभूत एवं सार्वभौमिक सामाजिक संस्था है, जो अपने सदस्यों के समाजीकरण तथा सामाजिक मूल्यों और मानदंडों के संचरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। परंपरागत रूप से भारतीय पारिवारिक संरचना का स्वरूप संयुक्त रहा है, जिसमें सामूहिकता, पारस्परिक सहयोग, पीढ़ीगत एकता तथा सामाजिक, आर्थिक एवं भावनात्मक सुरक्षा के तत्व प्रमुख रहे हैं। आई ०पी ०देसाई एवं ए०एम शाह जैसे समाजशास्त्रियों ने भारतीय परिवार को एक लचीली संस्था के रूप में रेखांकित किया है, जो सामाजिक परिवर्तनों के साथ स्वयं को अनुकूलित करती रही है।

वर्तमान समय में औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा के प्रसार, रोजगार के नए अवसरों, महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में परिवर्तन, सूचना प्रौद्योगिकी तथा वैश्वीकरण के प्रभावों के परिणामस्वरूप भारतीय परिवार तीव्र संक्रमण के दौर से गुजर रहे हैं। इन परिवर्तनों के कारण परिवार की संरचना, आकार, संबंधों तथा मूल्यों में नई आधुनिक प्रवृत्तियाँ उभरकर सामने आई हैं। कृषि से सेवा क्षेत्र की ओर स्थानांतरण, महिलाओं की आर्थिक उपार्जन में बढ़ती भागीदारी, पितृसत्तात्मक संरचना में आंशिक शिथिलता, विवाह और तलाक के बदलते स्वरूप, एकाकी एवं एकल परिवारों की बढ़ती संख्या तथा बुजुर्गों में एकाकीपन की समस्या जैसी प्रवृत्तियाँ भारतीय परिवारों को नए सिरे से परिभाषित कर रही हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य भारतीय पारिवारिक संरचना में उभरती आधुनिक प्रवृत्तियों के कारणों एवं उनके सामाजिक प्रभावों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। यह शोध पत्र वर्णनात्मक शोध प्रारूप पर आधारित है तथा द्वितीयक स्रोतोंकृपुस्तकों, शोध पत्रों, रिपोर्टों एवं उपलब्ध सांख्यिकीय आँकड़ोंकृके माध्यम से विषय का अध्ययन करता है। यह अध्ययन भारतीय परिवारों में हो रहे संरचनात्मक एवं मूल्यगत परिवर्तनों को समझने में सहायक सिद्ध होगा।

मुख्य शब्द: *पारिवारिक संरचना, आधुनिकीकरण, संयुक्त एवं एकाकी परिवार, लैंगिक भूमिका, वैश्वीकरण।*

प्रस्तावना–

प्रत्येक समाज में किसी न किसी रूप में परिवार एक सामाजिक संस्था के रूप में हमेशा विद्यमान रहा है जो अपने सदस्यों के बीच साझा

मूल्य, साझा निवास,आर्थिक सहयोग और प्रजनन संबंधी क्रियाओं को पूर्ण करने के लिए विशेषीकृत एवं सार्वभौमिक संस्था है। परिवार मानव जीवन की कोशिका है (कूले)तथा वह झूला जिसमें भविष्य पलता है एवं वह शिशुगृह जिसमें नए प्रजातंत्र का जन्म होता है(गोल्डस्टोन)। डॉ कर्वे भारतीय समाज को समझने के लिए भाषाई संरचना व जाति संरचना के बाद तीसरी सबसे महत्वपूर्ण संस्था संयुक्त परिवार को मानती है । भारत में परिवार का अर्थ कुछ समय पूर्व तक संयुक्त परिवार ही रहा जिसे मैक्स मूलर जैसे विद्वानों ने भारत की 'आदि परंपरा'' कहा तथा भारतीय समाजशास्त्री के एम परिक्कर हिंदू समाज की इकाई व्यक्ति को न मानकर संयुक्त परिवार को ही मानते हैं। संयुक्त परिवार की संरचनात्मक विशेषताएं विशेष रूप से उसकी संयुक्तता की प्रकृति, सदस्यों के संबंधों की पारस्परिकता, आकर, सदस्यों के व्यवसाय, आर्थिक स्तर, निवास की प्रकृति इत्यादि भागों में परिवर्तन की व्यापक क्रियाओं के अभियोजन, नवीनीकरण आदि प्रक्रियाओं को उत्पन्न करने में सहयोग दिया है। (सिंह ,महेंद्र नारायण) प्रो०देसाई परिवार की व्याख्या में पीढ़ियों की संख्या को विशेष महत्व देते हुए कहते हैं कि "उस परिवार को हम संयुक्त परिवार कहते हैं जिसमें अनेक पीढ़ियों के सदस्य एक साथ निवास करते हैं, संपत्ति,आय और पारस्परिक अधिकारों व दायित्वों के द्वारा परस्पर बंधे रहते हैं" किंतु वर्तमान में प्रोफेसर देसाई की इस परिभाषा में व्यापक बदलाव हुए हैं चूंकि संयुक्त परिवार आज भी हैं लेकिन उनकी संयुक्तता के स्वरूप में बदलाव आया है। आज ना तो साझा रसोई है ना ही एक ही छत के नीचे निवास लेकिन कुछ साझा मूल्य, विश्वास, परंपराएं और कर्तव्य उन्हें भौतिक रूप से जोड़े हुए हैं। तब प्रश्न यह उठता है कि क्या साझा मूल्य, विश्वास और परंपराएं बदलते परिदृश्य में संयुक्त परिवारों के बदलते स्वरूप को बचा पाएंगे? क्या यह उन्हें मजबूती प्रदान कर पाएंगे या भौतिक दूरियां, व्यक्तिगत स्वार्थ और आधुनिक प्रवृत्तियां उन्हें अपने में समाहित कर लेंगी ? प्रमिला क्रूज व शालिनी अपने शोध पत्र के सारांश में कहती हैं कि भारत में पारिवारिक शोध का विकास ही इस विश्वास की उत्पत्ति और स्थायित्व के लिए उत्तरदायी है कि भारतीय परिवार मूलत संयुक्त था और औद्योगीकरण एवं शहरीकरण के बाद इसका स्थान एकल परिवारों ने लिया। औद्योगिक क्रांति ने यूरोपीय समाज की जिस प्रकार से काया पलट की, उसी प्रकार भारतीय सामाजिक संरचना की भी दिशा दशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका तय की। निष्कर्षता यह कहना कि औद्योगीकरण एवं उससे उपजे नगरीकरण व वैश्वीकरण ने भारतीय संयुक्त परिवारों को एकल परिवारों में रूपांतरित करने में विशेष भूमिका में रहा ,गलत नहीं होगा। यह सर्वविदित है कि 20वीं शताब्दी ने समाज में पारिवारिक संरचनाओं और गतिशीलता में उल्लेखनीय परिवर्तन किए हैं–परिवारों का छोटा होना,वैवाहिक संबंधों में कमी, तलाक में वृद्धि, अविवाहित सहवास और अलग–अलग रहने, समान लैंगिक विवाह जैसे नए प्रकार के संबंधों का उदय, लिंग और अंतर पीढ़ी का सम्बन्धों में बदलाव तथा प्रजनन क्षमता में कमी इत्यादि (बहारेह

नासिरी) आधुनिक प्रवृत्तियां हैं जो भारतीय परिवारों को नए स्वरूप में प्रस्तुत कर रही हैं।

शोध की आवश्यकता व महत्व

वर्तमान परिदृश्य में वैश्वीकरण से प्रभावित भारतीय समाज तीव्र सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा है। इस बदलते हुए संदर्भ में इन परिवर्तनों को वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित दृष्टिकोण से समझने के लिए सामाजिक शोध की अत्यंत आवश्यकता है। सामाजिक शोध न केवल इन परिवर्तनों की प्रकृति को स्पष्ट करता है, बल्कि उनके प्रभावों का भी विश्लेषण करता है।

यह अध्ययन भारतीय परिवार में हो रहे सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों को समझने में सहायक है। यह पारिवारिक संरचना एवं भूमिकाओं के विश्लेषण के साथ–साथ नीतिनिर्माण, महिला सशक्तिकरण तथा भविष्य के शोध के लिए उपयोगी आधार प्रदान करता है।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के निम्न उद्देश्य इस प्रकार है–

- भारतीय परिवार की पारंपरिक संरचना में होने वाले परिवर्तनों को जानना।
- आधुनिक उदयीमान प्रवृत्तियों के कारणों का पहचानना ।
- उभरती प्रवृत्तियों के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत भारतीय पारिवारिक संरचना में उदीयमान आधुनिक प्रवृत्तियां: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन वर्णनात्मक शोध शैली एवं द्वितीयक स्रोतों पर आधारित शोध पत्र है जिसके अंतर्गत विभिन्न पुस्तकों शोध पत्रों, जर्नल्स, सरकारी रिपोर्ट्स, सर्वेक्षण इत्यादि की सहायता ली गई है। यह अध्ययन भारतीय परिवारों में हो रहे संरचनात्मक एवं मूल्यगत परिवर्तनों को समझने में सहायक सिद्ध होगा। शोधात्मक परिपेक्ष के अंतर्गत संरचनात्मक– प्रकार्यात्मक एवं नारीवादी शोध परिपेक्ष का प्रयोग किया गया है(परिवार अभी भी समाजीकरण नियंत्रण और भावनात्मक सुरक्षा का कार्य कर रहा है)। नारीवादी दृष्टिकोण से देखें तो परिवार अब केवल नियंत्रण की संस्था नहीं बल्कि बातचीत और साझेदारी की इकाई बनता जा रहा है ।

साहित्य समीक्षा

भारतीय परिवारों में हो रहे आधुनिक परिवर्तनों पर विभिन्न समाजशास्त्रियों द्वारा विभिन्न कालखंडों में गहन एवं सूक्ष्म अध्ययन प्रस्तुत किए हैं। ए० एम० शाह अपनी पुस्तक *द फैमिली इन इंडिया अ सोशियोलॉजिकल पर्सपेक्टिव* में स्पष्ट करते हैं कि संयुक्त परिवार अभी खत्म नहीं हुए हैं बल्कि अपने नए स्वरूप में आया है। शाह का मानना है कि भारतीय समाज में संशोधित संयुक्त परिवार (मोडिफाइड फैमिली)की अवधारणा उभरी है जहां भावनात्मक और आर्थिक संबंध बने रहते हैं भले ही भौतिक सह–निवास ना हो।

प्रो० टी एन मदान भारतीय परिवारों को केवल संस्था के रूप में नहीं बल्कि संस्कृति,धर्म,विश्वास व नैतिक मूल्यों से जुड़ी जीवन प्रणाली के तौर पर देखते हैं जो समय के साथ अनुकूलन व सामंजस्य को आत्मसात करती है। वहीं प्रोफेसर कपाड़िया अपनी कृति *मैरिज एंड फैमिली इन इंडिया* में संयुक्त परिवार का विश्लेषण करती हैं कि आधुनिक परिवर्तनों के बाद भी परिवार नियंत्रक व मध्यस्थ की भूमिका में है।

आई०पी देसाई संयुक्त परिवारों की पुनर्व्याख्या करते हुए परिवार की पारंपरिक धारणा से अलग इसे कार्यात्मक दृष्टिकोण से स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि संयुक्त परिवार मात्र सह–निवास के आधार पर नहीं बल्कि आर्थिक सहयोग सामाजिक उत्तरदायित्व तथा संयुक्तता के भाव के आधार पर कार्य करता है।

पेट्रिशिया ओबेरॉय परिवार को लैंगिक शक्ति संबंधों के संदर्भ में व्याख्यायित करती हैं। ओबरॉय का मानना है कि आधुनिक परिवारों में महिलाओं की भूमिका केवल ग्रहणी तक सीमित नहीं है वरन् घरेलू श्रम, निर्णय–निर्माण एवं प्रजनन अधिकारों पर नए विमर्श उभरे हैं। परिवार प्राइवेट स्फेयर नहीं बल्कि कानून, राज्य और मीडिया के हस्तक्षेप से प्रभावित होने वाली संस्था हो गई है। ओबरॉय की भांति लीला दुबे भी परिवार को लैंगिक समाजीकरण की प्रमुख संस्था मानती हैं। दुबे के अनुसार आधुनिकता ने स्त्री–पुरुष भूमिकाओं में बदलाव तो किया है किंतु पितृसत्ता समाप्त नहीं हुई है वहीं आंद्रे बेते आधुनिकता का वर्ग असमानता का प्रभाव को परिवार से जोड़कर अध्ययन करते हैं। बेते का मानना है कि मध्यम वर्गीय परिवारों में व्यक्तिवाद तेजी से बढ़ा है। नीता कुमार और रविंदर कौर अपने अध्ययन में परिवार को पहचान और सांस्कृतिक अनुभवों पर आत्मबोध के आधार पर देखते हैं। आपका मानना है कि आधुनिकता ने भारतीय परिवारों के भीतर सामाजिक आकांक्षाओं, महिलाओं की भूमिकाओं व पीढ़ी के संबंधों को पुर्न–परिभाषित किया है। परिवार परंपरा का मार्ग नहीं बल्कि संस्कृति के पुनर्निर्माण का केंद्र बन गया है,वहीं रविंद्र कौर समकालीन भारतीय समाज में परिवार राष्ट्र उपभोक्तावाद और वैश्वीकरण के अंतर्संबंधों का विश्लेषण करते हुए कहती हैं कि परिवार में बाजारवाद,उपभोक्तावाद संस्कृति के साथ मध्यम वर्गीय परिवारों में नई आकांक्षाएं, जीवन–शैली व बच्चों की परवरिश इनसे प्रभावित हुई है।यद्यपि भारतीय परिवारों में परिवर्तन पर अनेक समाजशास्त्रीय अध्ययन उपलब्ध हैं, तथापि अधिकांश अध्ययन संयुक्त से एकल परिवारों के रूपांतरण या महिलाओं की बदलती भूमिका तक सीमित रहे हैं। वर्तमान शोध डिजिटल संस्कृति, पितृसत्तात्मक संरचना में शिथिलता तथा बुजुर्गों की बदलती स्थिति जैसे समकालीन आयामों को समग्र रूप में विश्लेषित करने का प्रयास करता है, जो इसे पूर्ववर्ती अध्ययनों से भिन्न बनाता है।

भारतीय परिवारों में उदीयमान आधुनिक प्रवृत्तियां

संयुक्त परिवार से एकाकी की ओर रूपांतरण– पारंपरिक रूप से भारतीय परिवार संयुक्त परिवार ही रहा है किंतु धीरे–धीरे समयानुसार व आवश्यकता

अनुसार ये संयुक्त से एकल परिवारों की ओर स्थानांतरित होने लगा। 2011 की जनगणना के अनुसार संयुक्त परिवारों का प्रतिशत मात्र 16.01 था जबकि नाभिकीय परिवारों का प्रतिशत 52.1: बाकी अन्य मिश्रित परिवार थे। जैसा की प्रमिला कपूर और शालिनी अपने शोध सारांश में बताती हैं कि भारतीय परिवार मूलतः संयुक्त था किंतु औद्योगिकरण, नगरीकरण के बाद इसका स्थान एकल परिवारों ने ले लिया।एकल परिवारों में पितृसत्तात्मक व्यवस्था में ह्रास,व्यक्तिगत स्वतंत्रता में वृद्धि एवं व्यक्तिगत स्वार्थ में वृद्धि जैसी प्रवृत्तियां उभरी हैं।

डिजिटल परिवार की अवधारणा वर्तमान समय में उभरकर सामने आई है। आज संचार माध्यमों के द्वारा पारिवारिक संबंधों को बनाए रखा जा रहा है। Facebook, Instagram और WhatsApp जैसे प्लेटफॉर्म्स पर परिवार समूह (फैमिली ग्रुप), ऑनलाइन त्योहारों की शुभकामनाएँ, तथा वीडियो कॉल के माध्यम से परिवारजनों से निरंतर संपर्क बनाए रखा जाता है। इसके अतिरिक्त, YouTube व अन्य ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से बच्चों का समाजीकरण भी हो रहा है।

अतः कहा जा सकता है कि आज परिवार केवल भौतिक सह–निवास की इकाई नहीं रहा, बल्कि एक डिजिटल नेटवर्क के रूप में भी विकसित हो चुका है।

महिलाओं की भूमिका में बदलाव – चूंकि जैसे–जैसे संयुक्त परिवारों की संरचना में ह्रास आया है वैसे–वैसे महिलाओं की स्थिति व भूमिका में बदलाव देखे गए हैं। जहां संयुक्त परिवारों में महिलाओं की स्थिति निम्न व दयनीय थी, पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था ज्यादा हावी थी वहीं एकल पारिवारिक संरचना ठीक इसके उलट है, यहां स्त्रियां एक निर्णयकारी व कार्यकारी भूमिका में होती हैं। प्रमिला कपूर अपने अध्ययन में बताती है कि अब लगभग सभी भारतीय परिवार यही चाहते हैं कि उनकी लड़की, बहू, पत्नी, बहन नौकरी करें जिससे पारिवारिक आवश्यकताओं की उचित पूर्ति होती रहे।

वहीं ए आर देसाई लिखते हैं कि अब अधिकांश महिलाएं अपने आत्मसम्मान और व्यक्तित्व के विकास को जीवन का लक्ष्य मानने लगी है।आज हिंदू समाज के दो आधार स्तंभ संस्कारिक विवाह और संयुक्त परिवार शिथिल पड़ रहे हैं। एम एन श्री निवास का कहना है कि भारतीय समाज में विवाह एक संस्थागत व्यवस्था थी,जिसमें व्यक्तिगत इच्छाओं की भूमिका सीमित थी, तुलसी पटेल 2011 ने अपनी पुस्तक "भारत में परिवार संरचना एवं व्यवहार" में भारतीय परिवारों के संबंध में एकाकी व संयुक्त संरचना को एक रूढ़िवादी अवधारणा कहा है।

पितृसत्तात्मक में ह्रास– पितृसत्तात्मक में ह्रास आधुनिक परिवारों की प्रमुख विशेषता कही जा सकती है क्योंकि लैंगिक असमानता, लैंगिक विभाजन स्त्रियों की निम्न स्थिति तथा अन्य कई ऐसी समस्याएं (जैसे दहेज, ऑनर किलिंग, बलात्कार, बाल विवाह, बहु विवाह, तीन तलाक इत्यादि) पितृसत्तात्मक व्यवस्था की उपज कही जा सकती हैं। एक प्रमुख लेखिका व समाजशास्त्री सिल्विया वाल्वी पितृसत्ता की छः संरचनाएं बताती हैं–

1.उत्पादन का पितृसत्तात्मक तरीका।
2. मजदूरी में पितृसत्तात्मक संबंध।
3.पितृसत्तात्मक राज्य
4.पुरुष हिंसा
5.यौनिकता में पितृसत्तात्मक संबंध
6.पितृसत्तात्मक संस्कृति।

यह कहना अधिक तर्क संगत होगा कि भारतीय परिवारों में पूर्णरूपेण तो नहीं किंतु पितृसत्तात्मक व्यवस्था लचीली अवश्य हुई है। महिलाओं को अपनी स्थिति– प्रस्थिति सुधारने को और उच्च स्थिति हेतु ले जाने का यह महत्वपूर्ण समय कहा जा सकता है। वर्तमान में, परिवारों में विवाह तथा अन्य कई विचारधाराओं को स्थान मिला है। विवाह को लेकर व्यक्तिगत चयन, अंतर्जातीय व अंतर धार्मिक विवाह, लिव इन रिलेशनशिप,शादी में देरी, बढ़ती तलाक की दरें, संतानोत्पत्ति की अनिच्छा इत्यादि। ये प्रवृत्तियां परंपरागत पारिवारिक संरचना को तोड़ती हुई नए ढांचे व प्रतिमानों को प्रतिस्थापित कर रही है। अब प्रश्न ये उठता है कि इन प्रवृत्तियों के दूरगामी प्रभाव एवं परिणाम क्या होंगे?

बुजुर्गों की स्थिति – भारतीय समाज में बुजुर्गों की पारंपरिक रूप में सदैव विशिष्ट एवं सामान्य स्थिति रही है। वह अपने संचित ज्ञान से अपनी पीढ़ी एवं समाज के लिए दिशा निर्देशक एवं अनुभवों, मूल्यों,मान्यताओं ,परंपराओं विश्वासों के वाहक रहे हैं परंतु तीव्र परिवर्तनों के दर में बुजुर्गों की स्थिति में बदलाव आया है। भारतीय समाजशास्त्र के एक मूर्धन्य विचारक व समाजशास्त्री *परमजीत सिंह जज* की पुस्तक *त्रिकाल संध्या* ग्रामीण बुजुर्गों की स्थिति का वर्णन करती है कि किस तरह बढ़ती उम्र और तीव्र गति से हो रहे परिवर्तन उन्हें घर–परिवार, रिश्तेदारी व समाज के लिए आप्रसांगिक कर देते हैं। *अंसारी एवं मेहरोत्रा* अपने शोधपत्र *'पॉलिसीज एंड पॉलिटिक्स ऑफ एजिंग इन इंडिया'* में बताते हैं की बुजुर्गों की स्थिति आज बेहतर हुई है लेकिन शहरी बुजुर्गों की, ग्रामीण बुजुर्गों की नहीं। शहरी हो या ग्रामीण लेकिन बुजुर्गों में अलगाव एवं एकाकीपन की गंभीर समस्या पनप रही है। वृद्ध आश्रमों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। जहां बुजुर्ग पीढ़ी और युवा पीढ़ी में विचारों को लेकर टकराव देखने को मिलता रहा है वहीं युवा पीढ़ी बुजुर्ग पीढ़ी के अनुभवों व स्नेह से भी वंचित होते देखे जा सकते हैं। सिर्फ बुजुर्गों को ही देखभाल की आवश्यकता नहीं बल्कि बच्चों के परिपक्व समाजीकरण हेतु भी पुरानी पीढ़ी की समाज को आवश्यकता रहेगी। हालांकि सरकारी सुविधाएं और सुरक्षा में वृद्धि हुई है। बुजुर्ग आत्मनिर्भर व स्वतंत्र जीवन जीने की नई संभावनाओं से भी परिपूर्ण है लेकिन बेहतर समाज निर्माण हेतु साझा अनुभव एवं परस्पर देखभाल व कर्तव्य निर्वहन जरूरी है।

डिजिटल संस्कृति एवं प्रौद्योगिकी का प्रभाव– इंटरनेट और डिजिटल प्रौद्योगिकी ने समकालीन भारतीय पारिवारिक ढांचे व संबंधों को गहराई से प्रभावित किया है। स्मार्टफोन,सोशल मीडिया, ऑनलाइन शिक्षा, आर्टिफिशियल

इंटेलिजेंस ने पारिवारिक जीवन के संवाद नियंत्रण, भूमिका विभाजन,मूल्य एवं भावनात्मक संबंधों को नए स्वरूप में प्रस्तुत कर रही है। समाजशास्त्र में इस प्रकार के रूपांतरण को तकनीकी व सांस्कृतिक परिवर्तन के अंतरदृसंबंध के रूप में देखा जाता है। वर्तमान में वर्चुअल संवाद (व्हाट्सएप फेसबुक इंस्टाग्राम पर कॉल्स व चौट्स) बढ़ा है। जहां एक तरफ दूर बैठे रिश्तों से संवाद व संपर्क करने की सुविधा बढ़ी है तो दूसरी तरफ संवाद की गहराई में कमी आई है (नीता कुमार)। बच्चों और युवाओं में डिजिटल साक्षरता व दक्षता अधिक है किंतु बुजुर्गों में कम है जिससे बुजुर्ग उपेक्षित महसूस करते हैं तथा पीढ़ीगत दूरी में भी इजाफा हुआ है।बच्चों और युवाओं को सोशल मीडिया ने वैकल्पिक मूल्य स्रोत उपलब्ध कराए हैं जिससे पारिवारिक नियंत्रण कमजोर हो रहा है जैसा कि आई०पी देसाई का मानना है कि परिवार का सामाजिक नियंत्रण औपचारिक संस्थाओं और तकनीकी से साझा हो गया है।डिजिटल मीडिया ने निजता, गोपनीयता को कम व व्यक्तिगत स्वतंत्रता को तथा उपभोक्तावाद को बढ़ावा दिया है।

निष्कर्ष– परिवार सामाजिक ढांचे की मूलभूत इकाई है। इसके अभाव में सामाजिक व्यवस्था व प्रणाली को सुचारु रूप से संचालन व नियमन शायद संभव न हो क्योंकि आरंभ से लेकर अब तक इसके स्वरूप में ही परिवर्तन हुआ है, संस्था पूरी तरह से विघटित नहीं हुई है और ना ही भविष्य में विकसित होने के आसार हैं। वर्तमान में औद्योगिकरण शहरीकरण, वैश्वीकरण,शिक्षा,समाजीकरण, कानून व्यवस्था, इंटरनेट, सोशल मीडिया के द्वारा कई सारे परिवर्तन इसके बदलते स्वरूप के लिए उत्तरदायी कारकों ने अनेक उदीयमान प्रवृत्तियों को उत्पन्न किया है जिनका संगठित व विघटित दोनों तरह के प्रभाव पारिवारिक संरचना, भूमिकाओं, मूल्यों और संबंधों पर स्पष्ट दिखाई देता है। नाभिकीय परिवारों की संख्या में वृद्धि, विवाह, लिंग भूमिकाओं और निर्णय प्रक्रिया में व्यक्तिगत स्वतंत्रता का महत्व बड़ा है। महिलाओं की शिक्षा एवं रोजगार ने पारंपरिक पितृसत्ता ढांचे को चुनौती दी है हालांकि परंपरागत सांस्कृतिक मूल्य पूरी तरह समाप्त नहीं हुए हैं बल्कि आधुनिक संदर्भों के साथ सहदृअस्तित्व में बने हुए हैं। अतः भारतीय परिवारों में आधुनिक उदीयमान प्रवृत्तियों को विघटन के रूप में नहीं बल्कि सामाजिक अनुकूलन और पुर्नसंरचना की प्रक्रिया के रूप में समझ जाना चाहिए।

शोध ग्रंथ सूची

1. शाह. ए. एम,द फैमिली इन इंडियाःक्रिटिकल ऐसे (1998) ओरियंट लॉन्गमैन लि० प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ संख्या 52–55
2. मदान, टी एन, पाथवेजः एप्रोचस टू द स्टडी ऑफ सोसाइटी इन इंडिया (1994) ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस , दिल्ली
3. सिंह योगेंद्र, मॉडर्नाइजेशन ऑफ इंडियन ट्रेडीशन (2006) रावत पब्लिकेशन जयपुर
4. सिंह महेंद्र नारायण , नगरीय परिवेश और हिंदू परिवारः बदलते प्रतिमान(1987), विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली

5. ओबेरॉय, पैट्रिशिया (संपादित), फैमिली किंशिप एंड मैरिज इन इंडिया (1993), ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
6. सेंसस ऑफ इंडिया रिपोर्ट्स (2011– 2021 प्रोविजनल)
7. कुमार, नीता, द आर्टिसिंस ऑफ का बनारसः पापुलर कल्चर एंड आईडेंटिटी (1992), प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस
8. कौर ,रविंद्र, पार्टीशन नॉरेटिव्स अमोंग पंजाबी माइग्रेट्स आफ दिल्ली(2002),ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी।
9. बेते, आंद्रे, कास्ट क्लास एंड पावरःचेंजिंग पेटर्न्स ऑफ स्ट्रेटिफिकेशन इन ए तंजौर विलेज (1965) यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस
10. कर्वे, इरावती, किंशिप ऑर्गेनाइजेशन इन इंडिया (1965) एशिया पब्लिशिंग हाउस, बॉम्बे
11. परमार शुभ्रा, नारीवादी सिद्धांत और व्यवहार (2015) ओरियंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड ,दिल्ली
12. देसाई, आई पी,सम एस्पेक्ट ऑफ फैमिली इन इंडिया (1956) इकोनामिक वीकली, वॉल्यूमदृ08 पृष्ठ संख्या –35
13. कुमार,अशोक,परिवार के बदलते प्रतिमान एवं महिलाओं की भूमिका (2017) पीएचडी शोध प्रबंध, महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर, राजस्थान
14. विजन आई ए एस, भारत में पारिवारिक संरचना का बदलता स्वरूप (https//edn-visionias-in)
15. तिवारी,ए.के,समाजशास्त्र(2021),टारगेट पॉइंट प्रकाशन, प्रयागराज
16. सिंह जेपी, समाजशास्त्र की मूलभूत अवधारणाएं (2023 तृतीय संस्करण) पी एच ई लर्निंग प्राइवेट लि०, दिल्ली